

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 13 — ब्रह्मा का मोह

5 October 2026



यमुना के बालुकामय तट पर कृष्ण अपने ग्वालबाल साथियों के मध्य बैठे हैं, जो कमल की कर्णिका के चारों ओर पंखुड़ियों की भाँति उन्हें घेरे हैं, और सब आनन्दपूर्वक अपना वन-भोजन बाँट रहे हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह तेरहवाँ अध्याय समस्त ग्रन्थ के गूढ़तम अध्यायों में से एक है। अघासुर से अपने साथियों को बचाकर कृष्ण उनके साथ यमुना के तट पर आनन्दमय भोजन के लिए बैठते हैं। जब बछड़े भटक जाते हैं, तब वे उन्हें लाने जाते हैं; और उसी क्षण स्वयं स्रष्टा ब्रह्मा, बालक-प्रभु की शक्ति को और देखने की इच्छा से, समस्त बालकों और बछड़ों को चुपके से ले जाकर छिपा देते हैं। कृष्ण का उत्तर विस्मयकारी है: वे स्वयं को हर एक लुप्त बालक और बछड़े में विस्तारित कर देते हैं, उनके ठीक वैसे ही रूप बनकर, और पूरे एक वर्ष तक स्वयं ही झुंड भी होते हैं और ग्वाल भी — इतना पूर्णतः कि ब्रज की माताएँ भी केवल एक निरन्तर गहराते प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं जान पातीं। जब ब्रह्मा अपनी दृष्टि में केवल एक क्षण के बाद लौटते हैं, तब वे बालकों को यथावत् खेलते देखकर चकित रह जाते हैं, और उन्हें असंख्य चतुर्भुज विष्णु रूपों का ऐसा दर्शन होता है जो उन्हें नन्हे ग्वाल के चरणों में पूर्णतः विनम्र कर देता है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 13 (त्रयोदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: ब्रह्मा द्वारा बालकों और बछड़ों का हरण
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: यमुना का तट और व्रज में वृन्दावन के चरागाह
- केंद्रीय विषय: तटवर्ती भोजन; बछड़ों का भटकना; ब्रह्मा द्वारा बालकों और बछड़ों का हरण; कृष्ण का एक वर्ष तक उन सबमें विस्तार; बलराम का बोध; ब्रह्मा की मोहित अवस्था; असंख्य विष्णुओं का दर्शन; और ब्रह्मा का प्रभु के चरणों में विनम्र होना
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 1-64
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

बारहवें अध्याय में असुर अघासुर ने विशाल अजगर बनकर कृष्ण के साथियों को निगल लिया, और प्रभु ने उसके मुख में प्रवेश कर उसे भीतर से नष्ट किया तथा बालकों और बछड़ों को उबार लिया — और असुर तक को मुक्ति मिली। मुग्ध राजा परीक्षित ने और सुनना चाहा; और यह अध्याय, जिसे शुकदेवजी एक प्रिय शिष्य के योग्य रहस्य कहते हैं, ब्रह्मा के मोह की अद्भुत लीला को खोलता है।

तट पर भोजन

शुकदेवजी ने पहले परीक्षित की प्रभु को और-और सुनने की लालसा की प्रशंसा की, क्योंकि अच्युत की चर्चा सन्तों के हृदय को सदा नवीन लगती है, और उन्होंने एक रहस्य प्रकट करने का वचन दिया। अघासुर के मुख से ग्वालबालों को बचाकर कृष्ण उन्हें यमुना के बालुकामय तट पर ले आए और बोले, ‘प्यारे मित्रो, यह स्थान कितना रमणीय है — कोमल स्वच्छ बालू और कमलों की सुगन्ध से खिंचे भौरों का गुंजार! आओ, यहीं भोजन करें; दिन चढ़ आया है और हम भूखे हैं। बछड़े पास ही जल पीकर धीरे-धीरे घास चरें।’ अतः बालकों ने बछड़ों को कोमल घास पर छोड़ा, अपने भोजन के थैले खोले, और प्रभु के साथ बड़े आनन्द से भोजन करने लगे।

वे उन्हें घेरे वृत्ताकार बैठे, उनके मुख कृष्ण की ओर और आँखें प्रेम से खिली हुई, मानो कमल की कर्णिका के चारों ओर पंखुड़ियाँ। किसी ने फूलों की, किसी ने पत्तों, छाल या पत्थर की थालियाँ बनाई, और सब एक-दूसरे को अपने लिए व्यंजन दिखाते, हँसते और हँसाते रहे। और उन्हीं के मध्य समस्त यज्ञों के भोक्ता बैठे थे, बाँसुरी कमर के वस्त्र में खोंसे, सींग और छड़ी बगल में दबाए, बाएँ हाथ में भोजन का कौर लिए — परम प्रभु ग्वालबालक की भूमिका निभाते हुए, और स्वर्गवासी देख रहे थे।

बिभ्रद् वेणुं जठरपटयोः शृङ्गवेत्रे च कक्षे
वामे पाणौ मसृणकवलं तत्फलान्यङ्गुलीषु ।
तिष्ठन् मध्ये स्वपरिसुहृदो हासयन् नर्मभिः स्वैः
स्वर्गे लोके मिषति बुभुजे यज्ञभुग् बालकेलिः ॥ ११ ॥

*bibhrad veṇuṁ jaṭhara-paṭayoḥ śṛṅga-vetre ca kakṣe vāme pāṇau masṛṇa-kavalam tat-phalāny
aṅgulīṣu tiṣṭhan madhye sva-parisuhṛdo hāsayan narmabhiḥ svaiḥ svarge loke miṣati bubhuje
yajña-bhug bāla-keliḥ*

अर्थ: अपनी बाँसुरी कमर और वस्त्र के बीच खोंसे, सींग और छड़ी बाई बगल में दबाए, बाएँ हाथ में भोजन का कौर और उँगलियों में फल के टुकड़े लिए, वे अपने प्रिय साथियों के मध्य खड़े होकर अपने विनोदों से उन्हें हँसाते रहे; और यों समस्त यज्ञों के भोक्ता बालक की भाँति खेलते हुए भोजन करते रहे, जबकि स्वर्गवासी देखते रहे। (स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 11)

बछड़ों का भटकना और ब्रह्मा का हरण

जब बालक भोजन में मग्न थे, तब बछड़े ताजी घास के लोभ में वन में दूर भटक गए। अपने साथियों को व्याकुल होते देख कृष्ण ने — जो भय के भी भय हैं — उन्हें आश्चस्त किया: ‘मित्रो, भोजन बन्द मत करो; मैं स्वयं बछड़ों को लौटा लाता हूँ।’ और भोजन का कौर हाथ में लिए ही प्रभु पहाड़ों, गुफाओं और झाड़ियों में बछड़ों को खोजने चल पड़े।



जब बछड़े घास के लोभ में वन में दूर भटक जाते हैं, तब कृष्ण भयभीत बालकों को धीरज बँधाकर, हाथ में भोजन लिए ही बछड़ों को लौटाने चले जाते हैं (श्लोक 12-14)।

ठीक उसी समय कमल से उत्पन्न स्रष्टा ब्रह्मा, जो पहले आकाश से अघासुर के उद्धार को देखकर बालक की शक्ति पर आश्चर्यचकित हुए थे, उस मधुर महिमा को और देखना चाहते थे। अतः उन्होंने चुपके से बछड़ों को, और फिर बालकों को भी, ले जाकर छिपा दिया, और स्वयं देखने के लिए आकाश में ठहर गए।

अम्भोजन्मजनिस्तदन्तरगतो मायार्भकस्येशितु-
 द्रष्टुं मञ्जु महित्वमन्यदपि तद्वत्सानितो वत्सपान् ।
 नीत्वान्यत्र कुरुद्वहान्तरदधात् खेऽवस्थितो यः पुरा
 दृष्ट्वाघासुरमोक्षणं प्रभवतः प्राप्तः परं विस्मयम् ॥ १५ ॥

*ambhojanma-janis tad-antara-gato māyārbhakasyeśitur draṣṭuṁ mañju mahitvam anyad api
 tad-vatsān ito vatsapān nītvānyatra kurūdvahāntaradadhāt khe 'vasthito yaḥ purā
 dṛṣṭvāghāśura-mokṣaṇaṁ prabhavataḥ prāptaḥ paraṁ vismayam*

अर्थ: कमल से उत्पन्न ब्रह्मा, जो पहले आकाश में स्थित रहकर सर्वशक्तिमान् प्रभु द्वारा अघासुर के उद्धार को देखकर परम आश्चर्य को प्राप्त हुए थे, अब — बालक रूप में क्रीड़ा करते प्रभु की मधुर महिमा को और देखने की इच्छा से — बछड़ों और ग्वालबालों को अन्यत्र ले जाकर छिपा देते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 15)

लौटकर न बछड़े और न तट पर बालकों को पाकर कृष्ण ने दोनों को समस्त वन में खोजा। कहीं न पाकर सर्वज्ञ प्रभु तुरन्त समझ गए कि यह ब्रह्मा का ही किया हुआ है।

कृष्ण स्वयं ही सब बालक और बछड़े बन जाते हैं

तब लुप्त बालकों और बछड़ों की माताओं को — और अपनी लीला में मोहित स्रष्टा को भी — आनन्द देने के लिए ब्रह्माण्ड-रचयिता प्रभु ने स्वयं को झुंड भी बना लिया और ग्वाल भी। वे एक साथ हर बछड़े और हर बालक के ठीक वैसे ही शरीर बन गए — उनके हाथ-पैर, छड़ी-सींग-बाँसुरी-थैले, आभूषण-वस्त्र, स्वभाव, गुण, नाम, रूप, अवस्था और यहाँ तक कि उनकी क्रीड़ाएँ भी। सब कुछ विष्णुमय हो गया; जैसा शास्त्र कहते हैं, अजन्मा प्रभु, जो समस्त रूपों के आत्मा हैं, उन सबके रूप में प्रकट हो गए।

यावद् वत्सपवत्सकाल्पकवपुर्यावत् कराङ्घ्र्यादिकं
 यावद् यष्टिविषाणवेणुदलशिग् यावद् विभूषाम्बरम् ।
 यावच्छीलगुणाभिधाकृतिवयो यावद् विहारादिकं
 सर्वं विष्णुमयं गिरोऽङ्गवदजः सर्वस्वरूपो बभौ ॥ १९ ॥

*yāvad vatsapa-vatsakālpaka-vapur yāvat karāṅghry-ādikaṁ yāvad yaṣṭi-viṣāṇa-veṇu-dala-śig
 yāvad vibhūṣāmbaram yāvac chīla-guṇābhidhākṛti-vayo yāvad vihārādikaṁ sarvaṁ
 viṣṇumayaṁ giro 'nga-vad ajaḥ sarva-svarūpo babhau*

अर्थ: बछड़े चराने वाले बालकों और बछड़ों के छोटे-छोटे शरीरों को उनके हाथ-पैर और समस्त अंगों सहित, उनकी छड़ियों, सींगों, बाँसुरियों और थैलों सहित, आभूषणों और वस्त्रों सहित, और उनके स्वभाव, गुण, नाम, रूप, अवस्था तथा क्रीड़ाओं सहित धारण करते हुए — सब कुछ विष्णुमय हो गया; क्योंकि अजन्मा प्रभु, जो सबके आत्मा हैं, शास्त्रों के अनुसार उन सबके ही रूप में प्रकट हो गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 19)

हर बछड़े को उसके अपने बाड़े में और हर बालक के अपने घर में उसी बालक के रूप में प्रवेश करते हुए वे सबसे स्वागत पाते रहे। बाँसुरी का स्वर सुनकर माताएँ शीघ्रता से उठीं, अपने लालों को गोद में उठाया, कसकर गले लगाया, और उन्हें स्तनपान कराया, अपने प्रेम से बहते दूध को साक्षात् ब्रह्मानन्द का अमृत मानकर — क्योंकि वह वही था। इसी प्रकार गौओं ने अपने बछड़ों पर दुगना स्नेह उँडोला। और यों व्रजवासियों का अपने बालकों के प्रति, और सबसे बढ़कर कृष्ण के प्रति, प्रेम बिना जाने ही दिन-प्रतिदिन असीम रूप से बढ़ता गया। इस प्रकार स्वयं ही बछड़े, बालक और उनके रक्षक बनकर प्रभु ने पूरे एक वर्ष तक व्रज के चरागाहों और घरों में क्रीड़ा की।

बलराम का बोध

वर्ष पूरा होने से कुछ पहले, एक दिन जब कृष्ण और बलराम चरा रहे थे, तब गोवर्धन पर्वत पर ऊँचे चरती गौएँ नीचे दूर अपने बछड़ों को देखकर प्रेम से विह्वल हो उठीं और सिर तथा पूँछ उठाए, रँभाती हुई, थनों से दूध बहाती हुई कठिन ढलानों से नीचे दौड़ पड़ीं, यहाँ तक कि गौएँ और बछड़े परस्पर मिल गए। गोप, गौओं को न रोक पाने से लज्जित और खिन्न, कठिन मार्ग से नीचे उतरे — और वहाँ बछड़ों के बीच अपने ही पुत्रों को देखकर वे भी ऐसे प्रेम से भर उठे जिसने उनकी खिन्नता बहा दी, और उन्होंने बालकों को उठाकर गले लगाया और परम आनन्द से उनके सिर सूँघे।

बलराम ने यह देखकर कि समस्त व्रज का बालकों के प्रति स्नेह हर क्षण अकारण बढ़ता जा रहा है — अपने स्तनपायी शिशुओं से भी अधिक — इसका कारण सोचा। ‘यह क्या आश्चर्य है,’ उन्होंने विचारा, ‘कि व्रज का, और मेरा भी, इन बालकों के प्रति प्रेम वैसे ही बढ़ रहा है जैसे सर्वात्मा वासुदेव के प्रति — यह किसकी शक्ति है?’ विचार करते हुए उन्होंने अपनी दृष्टि से देखा कि सब बालक और बछड़े स्वयं कृष्ण के अतिरिक्त और कोई नहीं, और कृष्ण से पूछने पर उन्होंने जाना कि ऐसा ही है।

ब्रह्मा का मोह

इसी बीच ब्रह्मा लौटे, अपने विशाल काल-मान से केवल एक क्षण के अन्तराल के बाद — यद्यपि पृथ्वी पर पूरा एक वर्ष बीत चुका था। उन्होंने कृष्ण को ठीक पहले की भाँति सब बालकों और बछड़ों से घिरे खेलते देखा। चकित होकर वे सोचने लगे: ‘गोकुल के जिन बालकों और बछड़ों को मैंने अपनी माया की शय्या पर सुला दिया था, वे अब भी वहीं पड़े हैं और उठे नहीं। तब ये कहाँ से आए, जो पूरे एक वर्ष से मेरी शक्ति से अछूते रहकर विष्णु के साथ यहाँ खेल रहे हैं?’ बहुत देर तक वे यह सोचते रहे कि कौन असली हैं और कौन नहीं, और कुछ भी न जान सके। इस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड को मोहित करने वाले स्वयं अपनी ही माया से मोहित हो गए — जैसे अन्धकार रात्रि में लीन हो जाता है, या जुगनू की चिनगारी दिन के प्रकाश में खो जाती है, वैसे ही छोटी शक्ति बड़ी के आगे विलीन हो जाती है।

एवं सम्मोहयन् विष्णुं विमोहं विश्वमोहनम् ।

स्वयैव माययाजोऽपि स्वयमेव विमोहितः ॥ ४४ ॥

evam sammohayan viṣṇuṁ vimohaṁ viśva-mohanam svayaiva māyayājo 'pi svayam eva vimohitaḥ

अर्थ: इस प्रकार, समस्त विश्व को मोहित करने वाले विष्णु को मोहित करने का प्रयास करते हुए, अजन्मा ब्रह्मा स्वयं अपनी ही माया से मोहित हो गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 44)

असंख्य विष्णुओं का दर्शन

तब ब्रह्मा के देखते ही समस्त बछड़े चराने वाले बालक एक साथ विष्णु के रूपों में प्रकट हो गए — मेघ के समान श्याम, पीत रेशमी वस्त्र धारण किए, चतुर्भुज, शंख-चक्र-गदा-कमल लिए, मुकुट, कुण्डल, माला और श्रीवत्स से अलंकृत, चरणों से मस्तक तक कोमल नवीन तुलसीदल से वेष्टित। चन्द्रिका-सी मुस्कान से खिले, अरुण कटाक्ष से देखते हुए, वे चारों ओर से समस्त प्राणियों द्वारा — ब्रह्मा से लेकर तृण तक, पंचभूतों, सिद्धियों और सृष्टि के चौबीस तत्त्वों, काल और स्वभाव द्वारा — पूजित थे, प्रत्येक अपने साकार रूप में नृत्य, गीत और नमन अर्पित करता हुआ। सत्, ज्ञान, अनन्त और आनन्द के शुद्ध स्वरूप, संसार से अछूते और उपनिषदों के द्रष्टा ऋषियों की दृष्टि से भी परे, उन सबको ब्रह्मा ने एक ही साथ उस परम ब्रह्म के रूप में देखा जिसके प्रकाश से यह समस्त चराचर जगत् प्रकाशित होता है।

एवं सकृद् ददर्शाजः परब्रह्मात्मनोऽखिलान् ।

यस्य भासा सर्वमिदं विभाति सचराचरम् ॥ ५५ ॥

evam sakṛd dadarśajāḥ para-brahmātmāno 'khilān yasya bhāsā sarvam idaṁ vibhāti sa-carācaram

अर्थ: इस प्रकार एक ही दृष्टि में अजन्मा ब्रह्मा ने उन सबको साक्षात् परम ब्रह्म के रूप में देखा — जिसके प्रकाश मात्र से यह समस्त चराचर जगत् प्रकाशित होता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 55)



ब्रह्मा के देखते ही समस्त ग्वालबाल और बछड़े मेघ-श्याम, पीत रेशमी वस्त्र धारण किए, शंख-चक्र-गदा-कमल लिए, समस्त प्राणियों से पूजित असंख्य चतुर्भुज विष्णु रूपों में प्रकट हो जाते हैं (श्लोक 46-55)।

इस पर उनकी ग्यारहों इन्द्रियाँ आश्चर्य से स्तम्भित और निश्चल हो गई, और ब्रह्मा किसी ग्राम-देवता के सम्मुख रखी नन्ही गुड़िया की भाँति मौन और अचल खड़े रह गए। तब परम प्रभु ने, यह जानकर कि ब्रह्मा देखने में भी असमर्थ हो गए हैं, तुरन्त अपनी माया का पर्दा खींच लिया। ब्रह्मा, मृत्यु से उठे हुए किसी व्यक्ति की भाँति होश में आकर, कठिनाई से आँखें खोलकर सामने पहले की भाँति वृन्दावन को देखने लगे — और वहाँ

फिर वही परम ब्रह्म, अद्वितीय और अनन्त, एक नन्हे ग्वाल की भूमिका निभाते हुए, हाथ में भोजन का कौर लिए अपने बछड़ों और साथियों को खोज रहे थे।

कृष्ण के चरणों में विनम्र ब्रह्मा



अघासुर के उद्धार को देखकर और बालक-प्रभु की शक्ति को और देखने की इच्छा से, ब्रह्मा चुपके से पहले बछड़ों को और फिर बालकों को ले जाकर छिपा देते हैं, और आकाश में प्रतीक्षा करते हैं (श्लोक 15)।

यह देखते ही सृष्टिकर्ता का समस्त गर्व चूर-चूर हो गया। वे झटपट अपने हंस-वाहन से नीचे उतरे, स्वर्ण-दण्ड की भाँति धरती पर पूरी देह से लेट गए और अपने चारों मुकुटधारी मस्तकों को प्रभु के चरणों पर टिकाकर अनियंत्रित रूप से अश्रु बहाने लगे। बार-बार वे कृष्ण के चरणों में उठते और गिरते रहे, अभी-अभी देखी हुई महिमा को बार-बार स्मरण करते हुए। अन्ततः धीरे-धीरे उठकर, आँखें पोंछकर, झुके सिर, जुड़े हाथ और भावविह्वल काँपती वाणी से मुकुन्द की ओर देखते हुए, ब्रह्माण्ड के स्रष्टा उन स्तुतियों को अर्पित करने के लिए तैयार हुए जिन्हें अगला अध्याय अंकित करता है — ब्रज के बालक के समक्ष एक विनम्र ब्रह्मा की स्तुतियाँ।

दृष्ट्वा त्वरेण निजधोरणतोऽवतीर्य
पृथ्व्यां वपुः कनकदण्डमिवाभिपात्य ।
स्पृष्ट्वा चतुर्मुकुटकोटिभिरङ्घ्रियुग्मं
नत्वा मुदश्रुसुजलैरकृताभिषेकम् ॥ ६२ ॥

*dṛṣṭvā tvareṇa nija-dhoraṇato 'vatīrya pṛthvyāṁ vapuḥ kanaka-daṇḍam ivābhipātya spṛṣṭvā
catur-mukuta-koṭibhir aṅghri-yugmaṁ natvā mud-aśru-sujalair akṛtābhiṣekam*

अर्थ: यह देखकर ब्रह्मा शीघ्र ही अपने हंस-वाहन से उतरे और अपने शरीर को सोने के दण्ड की भाँति भूमि पर गिरा दिया; अपने चारों मुकुटों के अग्रभागों से प्रभु के दोनों चरणों को स्पर्श करते हुए उन्होंने प्रणाम किया और उन्हें आनन्द के आँसुओं के शुद्ध जल से नहला दिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 13, श्लोक 62)



अपना अभिमान विसर्जित कर ब्रह्मा अपने हंस से उतरकर नन्हे ग्वाल के चरणों में सोने के दण्ड की भाँति गिर पड़ते हैं, अपने चारों मुकुटों के अग्रभागों से उन्हें स्पर्श करते हैं, और आनन्द के आँसुओं से उन्हें धोते हैं (श्लोक 62-63)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् समस्त प्राणियों के आत्मा हैं। जब कृष्ण हर बालक और बछड़ा बन जाते हैं (श्लोक 19), तब भागवत एक ही क्षण में दिखा देता है कि वे अनेकों में से एक प्राणी नहीं, अपितु सबके रूप में प्रकाशित होने वाले आत्मा हैं। वे हर रूप के पीछे की वास्तविकता हैं।
2. स्रष्टा भी विनम्र हो सकते हैं। समस्त सृष्ट प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मा अपनी ही शक्ति से मोहित हो जाते हैं (श्लोक 44)। परम के समक्ष ज्ञान या पद का हमारा सारा अभिमान विलीन हो जाता है; विनम्रता ही एकमात्र उचित प्रतिक्रिया है।
3. माँ का प्रेम बिना जाने ही सत्य को पा लेता है। ब्रज की माताएँ स्वयं कृष्ण को ही अपने पुत्र रूप में स्तनपान कराती हैं, अपने प्रेम में साक्षात् ब्रह्मानन्द का अमृत चखती हुई। शुद्ध वात्सल्य प्रभु को सीधे स्पर्श करता है, वहाँ भी जहाँ बुद्धि नहीं पहुँच सकती।
4. छोटी शक्ति बड़ी के आगे विलीन हो जाती है। जिस प्रकार एक दीपक की लौ सूर्य के तेज के सामने निष्प्रभ पड़ जाती है, उसी प्रकार ब्रह्मा की माया कृष्ण के आगे विलीन हो जाती है (श्लोक 44-45)। कोई भी माया, चाहे कितनी विशाल हो, अपने स्वामी प्रभु के सामने नहीं टिकती।
5. परम एक साथ आत्मीय भी हैं और अनन्त भी। वही बालक जो हाथ में भोजन लिए भटके बछड़ों को खोजता है, असंख्य चतुर्भुज विष्णुओं के रूप में समस्त सृष्टि द्वारा पूजित देखा जाता है (श्लोक 46-55)। उनकी माधुरी और उनकी महिमा एक ही हैं।

एक भाक्तेमय चिन्तन

यह अध्याय दो चित्रों को साथ-साथ रखता है, और सम्पूर्ण भक्ति उन्हीं के बीच के अवकाश में बसती है: एक नन्हा बालक हाथ में भात का कौर लिए कुछ खोए बछड़ों को ढूँढने वन में जाता हुआ, और वही बालक समस्त सृष्टि द्वारा पूजित भगवान् के असंख्य चतुर्भुज रूपों के रूप में प्रकट। ब्रह्मा, जो यह परखने आए थे कि इनमें असली कृष्ण कौन है, सबसे गूढ़ रहस्य सीख गए — कि कोई भेद ही नहीं है; खोजता हुआ बालक और परम ब्रह्म एक ही हैं। हम भी प्रायः ब्रह्मा की भाँति भगवान् को परखने, झुकने से पहले शक्ति का प्रदर्शन माँगने के प्रलोभन में पड़ते हैं। किन्तु प्रभु का उत्तर हमें अभिभूत करना नहीं है; वह है नन्हा ग्वाल बने रहना, भोजन थामे, बछड़े पुकारते, स्वयं को प्रेम किए जाने देते हुए। अनेक विष्णुओं का दर्शन केवल एक क्षण रहता है; ब्रज का बालक शेष रह जाता है। और शायद यही कृपा है: कि अनन्त ने स्वयं को इतना छोटा बना लिया कि हृदय में समा जाएँ, जिससे ब्रह्माण्ड के स्रष्टा तक उनके चरणों में रो सकें, और हम भी।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज भगवान् को परखने या मापने की प्रवृत्ति को त्यागकर, उन्हें केवल वैसे ही प्रेम करें जैसे उन्होंने स्वयं को आपके लिए सुलभ बनाया है — निकट, कोमल, और हृदय में धारण करने योग्य छोटे। इस अध्याय के दो चित्रों को स्मरण करें, खोजता हुआ ग्वाल-बालक और असंख्य विष्णु, और उन्हें यह स्मरण कराने दें कि जिन प्रभु को आप आत्मीयता से प्रेम करते हैं, वही समस्त सृष्टि के पूज्य प्रभु हैं। जहाँ अपने ज्ञान का अभिमान उठे, उसे ब्रह्मा की भाँति ब्रज के बालक के चरणों में झुका दें। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह तेरहवाँ अध्याय हमें भागवत के ईश्वर-दर्शन के हृदय तक ले जाता है। कृष्ण अपने साथियों के साथ तट पर भोजन करते हैं; बछड़े भटक जाते हैं; और ब्रह्मा, बालक की शक्ति को और देखने की उत्सुकता में, बालकों और बछड़ों को हर ले जाते हैं। उत्तर में प्रभु स्वयं ही उन सबका रूप धारण कर लेते हैं और पूरे बारह महीनों तक वे ही बछड़े और वे ही ग्वाल-बाल बने रहते हैं, ब्रज के गहराते प्रेम के अतिरिक्त किसी को इसका भान नहीं होता। जब ब्रह्मा लौटकर बालकों को यथावत् खेलते पाते हैं, तब वे अपनी ही माया से चकित हो जाते हैं और उन्हें असंख्य विष्णुओं का दर्शन मिलता है, जिसके आगे उनका अभिमान विलीन हो जाता है और वे नन्हे ग्वाल के चरणों में रोते हुए गिर पड़ते हैं। एक ही अध्याय में हम प्रभु को बालकों के आत्मीय मित्र के रूप में और समस्त सत् के आत्मा के रूप में देखते हैं। यह दुहरा दर्शन हममें गोपों का कोमल प्रेम और विनम्र स्रष्टा का विस्मय — दोनों जगाए, जब तक हम भी केवल उस बालक की सेवा में सन्तुष्ट न हो जाएँ जो समस्त लोकों का आश्रय है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), त्रयोदश अध्याय।

- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-13-brahma-steals-the-boys-and-calves-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

